असगर और उसकी प्यारी बिल्ली

अंजुम नईम

असगर, हमारा सबसे छोटा बेटा, मेरी यादों के खज़ाने का अनमोल रत्न है। वह खासा खूबसूरत, खुशमिज़ाज और पढ़ाकू बच्चा था और पांचवीं में पढ़ता था। एक दिन असगर बिल्ली का एक कमज़ोर-सा काला बच्चा लिए स्कूल से लौटा जिसकी गर्दन पर दो सफेद धारियां थीं।

मैंने तो खैर घर आए मेहमान के बारे में अपनी राय अपने पास ही रखी लेकिन घर के सभी लोगों ने असगर की बिल्ली का दिल खोलकर स्वागत किया। मेरी पत्नी शहनाज़ ने पैगम्बर हज़रत मोहम्मद की प्यारी बिल्ली के नाम पर बिल्ली के बच्चे का नाम मुअज़्ज़ा रख दिया। वह अक्सर पैगम्बर हज़रत मोहम्मद के बारे में कहानी सुनाती कि एक बार बिल्ली उनके लबादे की बांह पर सो गई, नमाज़ का वक्त हुआ तो उन्होंने बिल्ली की नींद में खलल डालने के बजाय लबादे की बांह काट दी और बिना बांह का लबादा पहने ही नमाज़ पढ़ने चले गए।

मुअज़्ज़ा और असगर जैसे एक-दूसरे के बिना रह ही नहीं पाते थे। वह असगर के स्कूल से लौटने का इंतज़ार करती और वह घर पहुंचता तो म्यांऊं-म्यांऊं करती, उसके पैरों पर लोटपोट होती। असगर उसे अपने कमरे में ले जाता और दिनभर के हालचाल सुनाता। हम असगर की हंसी और मुअज़्ज़ा की म्याऊं-म्याऊं सुनते।

जुलाई 1999 में असगर के घुटनों में दर्द की शिकायत हुई जो तेज़ी से बढ़ती चली गई। डॉक्टर बीमारी की पड़ताल कर रहे थे, अगस्त तक मेरे बेटे की हालत यह हो गई कि वह न बोल पाता था और न ही कुछ निगल पाता था। लेकिन हमें हिम्मत बंधाए रखने के लिए असगर तब भी मुस्कुराता रहता।

काफी सारी तकलीफ़देह जांचों के बाद डॉक्टरों ने बताया कि हमारे बेटे को शरीर के ऊतकों में ज़रूरत से ज़्यादा तांबा जमा हो जाने की वजह से होने वाली बीमारी विल्सन डिज़ीज़ है जो शुरूआत में ही ठीक हो सकती है। असगर के मामले में बीमारी पकड़ में आने तक बहुत देर हो चुकी थी।

हम टूट गए, हमारी आंखों के सामने हमारा बच्चा तिल-तिल करके जा रहा था। दिनभर असगर की देखभाल उसकी मां करतीं, रात को मैं। लेकिन उन आखिरी चार महीनों में मुअज़्ज़ा हरदम असगर के आसपास बनी रहती जैसे उसे मालूम हो कि उसकी मौजूदगी मंज़िल की तरफ बढ़ते इस मुसाफिर का धीरज टूटने नहीं देगी।

17 दिसम्बर 1999 की शाम हम रोज़ा खोलने की तैयारी कर रहे थे कि असगर ने आखिरी सांस ली। अंतिम संस्कार के समय भी मुअज़्ज़ा ने असगर को अकेला नहीं छोड़ा- हमारी निगाहें मिलतीं तो वह करुण स्वर में म्याऊं करती। मैंने उसे जनाज़े के साथ कुछ दूर तक चलते देखा। वह रात मेरे लिए बहुत ही डरावनी थी। यूं तो वह रात महीनों के अन्य दिनों की तरह ही थी, शहनाज़, मैं और मुअज़्ज़ा पहले की तरह मौजूद थे लेकिन मुअज़्ज़ा के दोस्त का बिस्तर खाली था।